International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 02, February 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कर्णाट कालीन म थला का स्व र्णम इतिहास

डॉ० चन्दा कुमारी
स्नातकोत्तर इतिहास वभाग ल० ना० म० व० व०,दरभंगा

म थला के इतिहास में कर्णाट वंश के शासन काल को स्व र्णम काल कहा जाता है, सदियों की अराजकता के बाद कर्णाट वंश की स्थापना हुई जिससे पुनः म थला में शांति एवं शासन व्यवस्था की स्थापना हुई ।

ईसा पूर्व 300 से 1200 ई0 तक कुल 2500 वर्षों के बीच उच्छुता कतनय नि म के पुत्र म थ जनक से लेकर साठ पीढ़ी तक चलने वाले जनक वंश के अन्तिम शासक कृति कराल जनक के बाद म थला वैशाली के गणतान्त्रिक वृज्जिसंघ में शा मल हो गया।

पुनः मगध सम्राट बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु ने 484 ईसा पूर्व में वृज्जि संघ को जीतकर म थला सहित वैशाली की राजधानी पाट लपुत्र बना दी थी। नन्द वंश के संस्थापक महापद्म नन्द ने 336 ई० पू० मे म थला पर अपना शकंजा और भी मजबूत कया और तबसे चौदह सौ वर्षों तक यह नन्द, मौर्य, कुषाण, गुप्त, हर्ष, तिब्बती, चन्देल,गुर्जर, सेन और पाल शासकों के भाग्य से ई० पू० 484 से 1097 ई० तक जुड़ता-टूटता रहा। इसकी अनिश्चितता का दौर 1097 ई० में तब समाप्त हुआ जब कर्णाट वंशी राजा नान्यदेव ने वदेह प्रान्त को दासता की बेड़ी से मुक्त कराकर उसकी खोयी हुई गरिमा को एक स्वतन्त्र प्रदेश के रुप में पुनः स्था पत कया और म थला मे जनक वंश के बाद एक सर्वप्रभुसत्ता सम्पन्न शासक का स्व र्णम शासन पुनः प्रारम्भ हुआ।कर्णाट वंश के प्रथम शासक नान्यदेव द क्षण भारत के रहने वाले थे। इतिहासकारों के लए यह कहना कठिन है क वे द क्षण से उत्तर भारत में क्यों और कैसे आये! ले कन इनका अनुमान है क चूं क पाल राजाओं की शक्तिहीनता से लाभ उठाकर क्षेत्रीय
सामन्तों ने जब अपना-अपना स्वतन्त्र शासन चलाना प्रारम्भ कया तब उसी समय द क्षण से कुछ महत्वाकाँक्षी सैनिक प्रवृत्ति के लोग आये और जिस तरह सेन वंश बंगाल में शासक बन बैठा, उसी तरह नान्यदेव ने भी म थला पहुँचकर राजसत्ता की नींव डाली और लोगों ने उनका स्वागत कया। महाराजा नान्यदेव जाति से क्षत्रिय एवं स्वभाव से साह सक थे महाराजा नान्यदेव ने कर्नाटक प्रान्त से अर्जित करने के लए 14000 अश्वारोही सैनिकों के साथ सीतामढ़ी के कोईली स्थान पर पहुंच कर अपने नाम से नानपुर नगर बसाया और 1098 ई० में नेपाल को पराजित कया ।

नान्यदेव एवं उनके उत्तरा धकारियों ने कर्णाट वंश के नाम से सवा दो सौ वर्षों 1097 ई० से 1323 ई० तक म थला पर शासन कया। इस वंश के सभी छः राजा नान्यदेव सहित क्रमशः गंगदेव, नर संहदेव, राम संह देव, शक्ति संह देव एवं हरि संह देव पूर्णतः स्वतन्त्र एवं सर्वप्रभु शक्ति सम्पन्न शासक थे। संस्कृत के वद्वानों ने संस्कृत साहित्य वाङ्मय में कर्णाट वंशीय राजाओं को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में व र्णत कया गया था ।

उत्तर में नेपाल का राज्य पूर्व में म थला पर सेन वंश के लक्ष्मणसेन का राज्य और पश्चिम में काशी एवं कन्नौज के राजा जयचन्द्र का राज्य था । नेपाल का राज्य जीतने के बाद नान्यदेव को म थला का राज्य जीतने की इच्छा थी नान्यदेव ने म थला के राज्य के लए लक्ष्मणसेन से युद्ध कया और वह पराजित हो गए उन्हें कारागार में बंद कर दिया गया ।गंगदेव एवं मल्लदेव यह दोनों नान्यदेव के पुत्र थे उन्हें जैसे ही खबर लगी क उनके पता को बंदी बना लया गया है वह जयचंद्र से सेना की मदद लेकर

लक्ष्मणसेन की सेनाओं को पराजित कर दिया और अपने बंदी पता को छुरा लया इसी मौके पर क व वद्यापति ने भी इस घटना का वर्णन "पुरुष परीक्षा" में कया है ।नान्यदेव आजाद होते ही अपने दोनों पुत्रों और सेनाओं के साथ लक्ष्मणसेन की राजधानी पर आक्रमण करके उस पर अपना कब्जा जमा लया और उसे अपनी राजधानी बना लया ।जिसका नाम ' समराँवगढ़' था ।नान्यदेव कर्नाट वंश के संस्थापक और पहले राजा थें । और हरि संह देव के पूर्वज थें। उन्होंने अपनी राजधानी समराँवगढ़ में स्था पत की और 50 वर्षों तक म थला क्षेत्र पर शासन कया।

नान्यदेव के वजेता होने के साथ ही सेन वंश का म थला में सूर्यास्त, हो गया था जिसकी नींव आदिशूर ने पाल वंश के अन्तिम राजा मदनपाल को पराजित करने के बाद डाली थी । जिसके सम्बन्ध में वाचस्पति मश्र ने भी लखा था ।अन्धराठाढ़ी पौरा णक काल में भी नृग राजा की राजधानी थी और नृग राजा के अन्धा होने के कारण इसे अन्ध राजधानी कहा जाता था। साथ ही कर्णाट वंश की स्थापना के पूर्व से ही यहाँ भामती वाचस्पति की ज्ञान मन्दा कनि की धारा बह रही थी।अबतक के म थला के वद्वान और वदू षयों यथा- भारती मण्डन तथा मैत्रेयी याज्ञवल्क्य से संसार परि चत हो चुका था । सर्वतंत्र स्वाचस्पति अपनी प्रेयसी के त्याग और निःस्वार्थ प्रेम के वदले शाहजहाँ के समान ताजमहल का तो निर्माण नहीं कर सके ले कन अपनी पत्नी के नाम पर भामती नामक टीका को लखकर परा मड का निर्माण कया जो यावत् चन्द्र दिवाकरौ कायम रहेगा ।अन्धराठाढ़ी के सांस्कृतिक और धा र्मकता से आकृष्ट होकर और मुसलमानी शासकों से संकट आने का अनुमान कर नान्यदेव के उत्तरा धकारियों ने सीमराव के बदले अन्धराठाढ़ी को ही राजधानी में परिवर्तित कया और इसे केन्द्रस्थल बनाकर उत्तरी-पूर्वी नेपाल की सीमा की ओर ईशानकोण मे बढ़ना शुरू कया। यह परिवर्तन गंगदेव के बाद नर संह देव के शासन काल में 1139 ई0 में हुआ होगा, क्यों क राम संह के शासन काल में देव 1191 A.D. और शक्र संह देव का शासन 1283 ई० में शक्रेश्वरी स्थान तथा अन्धराठाढ़ी और शक्रेश्वरी के बीच परसा की सूर्यमूर्ति जागेश्वर स्थान साँगी महादेव मठ एवं बरूआर का गढ़ एवं लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्तियाँ कर्णाट प्रतीत होती है।शक्र संह के उत्तरा धकारी कर्णाट वंश के अन्तिम शासक हरि संह देव (1300-1324 A.D.) प्लेटो की कल्पना के साकार दार्शनिक राजा थे। कर्णाट वंश के शासन काल को स्व र्णम काल' की संज्ञा दिलवाने का श्रेय भी इन्ही को प्राप्त है। इन्होंने ही सर्वप्रथम ब्राह्मणों को तीस कोटि में बाँटकर वैवाहिक सम्बन्धों के लए अनुवां शक सूची पंजी तैयार करवायी जो म थला में आज भी प्रच लत है। इन्होंने अनेक मन्दिरों, सड़कों और तालावों का निर्माण करते हुए म थला राजकोप के लए

अपार सम्पति अर्जित की। वर्ण रत्नाकर मै थली साहित्य में 13वीं सदी की एक प्राचीनतम और अमूल्य ग्रंथ है ।

साहित्यिक कार्य उन्होंने कई धुनों को बनाया और संस्कृत के काम, सरस्वती हृदयालंकार और ग्रंथ-मह र्ष में अपना ज्ञान दर्ज कया।

इन कर्नाट राजाओं के काल में साहित्य, कला और संस्कृति का वकास बड़े पैमाने पर हुआ था। दरभंगा, मधुबनी आदि पूर्व मध्यकालीन तीरभुक्ति (तिरहुत) के व भन्न स्थलों से बहुत अ धक मात्रा में सूर्य, वष्णु, गणेश,उमा-महेश्वर आदि पाषाण प्रतिमाओं की प्राप्ति हुई है।इन मूर्तियों की प्राप्ति में कर्नाटकालीन शासकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

हरि संह देव (1295 से 1324 ई.), नान्यदेव के छठे वंशज म थला साम्राज्य पर शासन कर रहे थे। उसी समय तुगलक वंश सत्ता में आया, जिसने दिल्ली सल्तनत और पूरे उत्तर भारत पर 1320 से 1413 ईस्वी तक शासन कया। 1324 ई. में तुगलक वंश के संस्थापक और दिल्ली सुल्तान, गयासुद्दीन तुगलक ने अपना ध्यान बंगाल की ओर लगाया। तुगलक सेना ने बंगाल पर आक्रमण कया और दिल्ली वापस आने पर, सुल्तान ने समराँवगढ़ के बारे में सुना जो जंगल के अंदर पनप रहा था। कर्नाट वंश के अंतिम राजा हरि संह देव ने अपनी ताकत नहीं दिखाई और कले को छोड़ दिया क्यों क उन्होंने तुगलक सुल्तान की सेना के समराँवगढ़ की ओर जाने की खबर सुनी। सुल्तान और उसकी टुकड़ी 3 दिनों तक वहाँ रहे और घने जंगल को साफ कर दिया। अंत में 3 दिन, सेना ने हमला कया और वशाल कले में प्रवेश कया, जिसकी दीवारें लम्बी थीं और 7 बड़ी खाईयों से घिरी हुई थीं। समराँवगढ़ क्षेत्र में अभी भी अवशेष बिखरे हुए हैं। राजा हरि संह देव तत्कालीन नेपाल में उत्तर की ओर भाग गए। हरि संह देव के पुत्र जगत संह देव ने भक्तपुर नायक की वधवा राजकुमारी से ववाह कया। उत्तर बिहार के गंधवरिया राजपूत समराँव राजाओं के वंशज होने का दावा करते हैं।

संदर्भ- सूची:

1. म थला तत्व वमर्श .

2.द्द० 2,हिस्ट्री ऑफ म थला पृ० 34-124 .

3.डी० एस० त्रिवेद, हिस्ट्री ऑफ प्री मौर्यन बिहार,पृ० 82 .

4.अमृत बाजार पत्रिका -22 फरवरी,1982 .

5.आर०पी०दत्त, आज का भारत,पृ० 137 .

6.आर०के० चौधरी, भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास,पृ० 340 .

7. म थला दर्पण,पृ० 125-126 .

8. म थला ए यूनियन रिपब्लिक,पृ० 153 .

9. म थला ज्योति, वर्ष-1, करण-7,पृ० 41 .

10. श्याम नारायण संह, हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कोलकाता,1922 .

11. चंद्रनाथ मश्र'अमर', मै थली पत्रकारिताक इतिहास,पटना,1981 .

12.दरभंगा प्रक्षेत्र की पाषाण प्रतिमायें -सुशान्त कुमार ,कला प्रकाशन,वाराणसी (उत्तर प्रदेश) 2015 .

13. म थलाक इतिहास - उपेन्द्र ठाकुर; मै थली अकादमी, पटना; द् वतीय संस्करण-1992,पृ० 148-149 .

14. उपेंद्र ठाकुर, हिस्ट्री ऑफ म थला,दरभंगा,1956,पृ० 385 .

15. म थला का इतिहास - डाॅ. रामप्रकाश शर्मा, कामेश्वर संह संस्कृत व. व.दरभंगा; तृतीय संस्करण-2016,पृ०195-196 .